बातें अनमोल

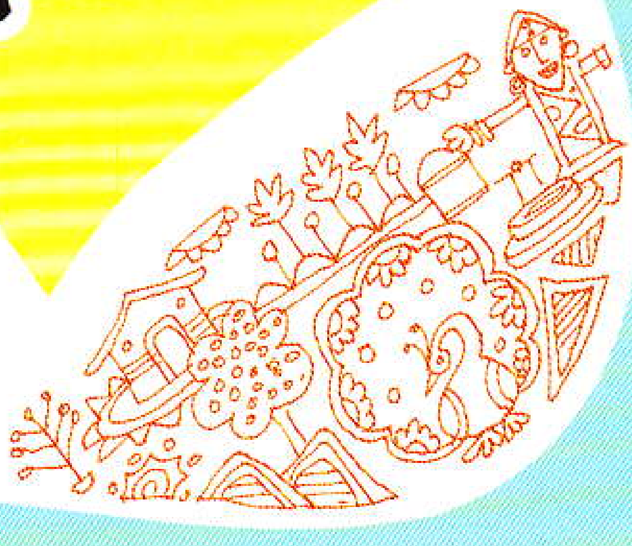

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म. प्र.)

बातें अनमोल

(प्रेरक प्रसंग)

कोड नं.	:	001 (ll)
प्रस्तुति	:	श्री वीरेन्द्र तँवर
सम्पादन	:	तारा जायसवाल
चित्रांकन	:	इस्माइल लहरी
संस्करण	:	प्रथम, फरवरी 2006
प्रतियाँ	:	2000
मूल्य	:	10.00 रु.

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर

भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र. शाखा
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर, इन्दौर- 452010
फोन : 2551917, 2574104, फैक्स : 0731-2551573
Email : srcindore@dataone.in
literacy@satyam.net.in

मुद्रक : कलर ग्राफिक्स, राजेन्द्र नगर, इंदौर

आमुख

लोक कथाओं का जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें लोकजीवन की सजीव व मनोरंजक झाँकी मिलती है। ये नीति और मर्यादाओं पर आधारित होती हैं। इनमें जीवन का सार छुपा रहता है। बड़े मनोरंजक ढंग से ये कथाएँ मानव का पथ प्रदर्शन करती हैं।

'बातें अनमोल' पुस्तिका में दी गई कथाएँ नवसाक्षरों का मनोरंजन करेंगी, साथ ही उनमें छुपे हुए गूढ़ नैतिक मूल्य लोगों को मार्गदर्शन भी प्रदान करेंगी। इस पुस्तिका में दी गई कथाओं की प्रस्तुति **श्री वीरेन्द्र तँवर** द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से की गई है। आकर्षक चित्रांकन **श्री इस्माइल लहरी** द्वारा किया गया है। केन्द्र इनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

आशा है कि यह पुस्तिका नवसाक्षरों को अवश्य ही पसंद आएगी। पुस्तिका के सम्बन्ध में आपके सुझावों का सदैव ही स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर

निदेशक

राज्य संसाधन केन्द्र

प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

मैं खुदा के साथ था

संत खय्याम खुदा के परम भक्त थे। वे हर दिन नियम से नमाज अदा करते थे। एक बार की बात है। संत खय्यामअपने चेले के साथ एक जंगल से गुजर रहे थे। तभी नमाज पढ़ने का समय हो गया। गुरू और चेले दोनों नमाज पढ़ने लगे।

उसी समय चेले को शेर दहाड़ने की आवाज सुनाई दी। चेले ने देखा कि शेर उनकी ओर ही चला आ रहा है। वह बेहद घबरा गया।

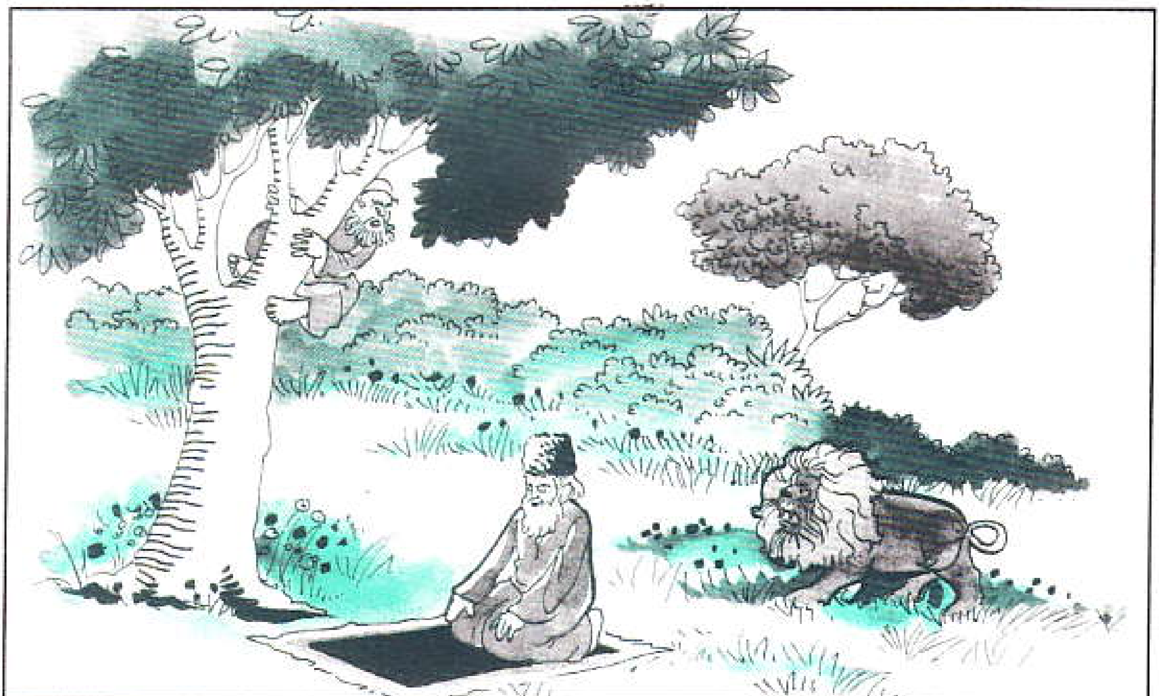

अपनी जान बचाने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया। खय्याम साहब खामोशी से नमाज पढ़ते रहे।

शेर खय्याम साहब को देखकर चुपचाप आगे बढ़ गया। थोड़ी देर बाद चेला पेड़ से उतरा। तब तक खय्याम साहब की नमाज पूरी हो चुकी थी। वे उठे और चेले के साथ आगे बढ़े।

जंगल के रास्ते में मच्छर, कीट-पतंगें, जीव-जन्तु भी थे। तभी संत खय्याम के गाल पर एक मच्छर आकर बैठा और काटने लगा। संत ने चलते-चलते ही अपने गाल पर चपत लगाई। मच्छर उड़ गया। यह माज़रा देखकर चेला बोला- 'मेरे दिल में एक शंका है, उसका समाधान कीजिए।'

'पूछो क्या शंका है तुम्हारी?'

'थोड़ी देर पहले शेर आपके पास से गुजरा। आप बिलकुल डरे नहीं, घबराए नहीं। आपको उसके आने का पता भी नहीं चला। किन्तु एक छोटे से मच्छर के काटने पर आपको पता चल गया। आपने उसे मारकर भगा दिया? ऐसा क्यों?'

संत खय्याम ने चेले की शंका का समाधान करते हुए कहा- 'तुम्हारी

शंका ठीक है। जब शेर मेरे पास आया, तब मैं ख़ुदा के साथ था। जब मच्छर ने मुझे काटा, उस समय मैं तुम्हारे साथ था। बात यह है कि इंसान जब खुदा के साथ होता है, तब मौत भी उलटे पांव लौट जाती है। जब इंसान, किसी इंसान के साथ होता है तो वह जरा से मच्छर से ही परेशान हो जाता है। यही अन्तर है, खुदा के साथ और इंसान के साथ होने का।'

☆

दयालुता

अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे। एक दिन वे अपने मित्र के साथ बग्घी में बैठकर एक सभा में जा रहे थे। रास्ते में एक गड्ढे में उनको एक सूअर का बच्चा दिखाई दिया। वह कीचड़ में फंसा, तड़प रहा था।

अब्राहम लिंकन तुरन्त बग्घी से उतरे। उन्होंने गड्डे में उतरकर

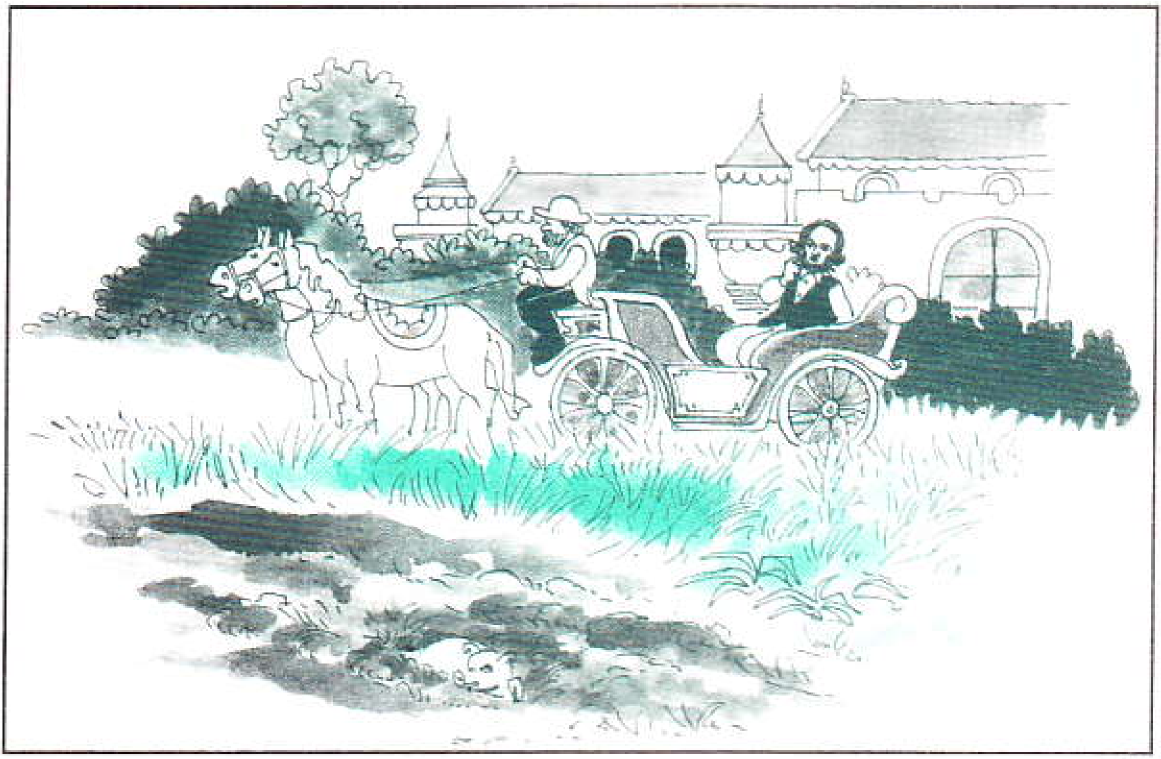

तड़पते बच्चे को बाहर निकाला।

इससे उनके कपड़े और हाथ-पैर गंदे हो गए। सभा का समय हो रहा था। वे समय के बड़े पाबंद थे। घर जाकर कपड़े बदलने का समय नहीं था। उन्होंने हाथ-पैर धोए और सभा में जा पहुँचे। उन्हें इस हालत में जिसने भी देखा, देखता ही रह गया।

सभा शुरू हुई। आयोजक ने कहा- 'हमें हमारे राष्ट्रपति पर गर्व है। वे समय के बड़े पाबंद हैं। साथ ही वे कितने दयालु हैं, इसका प्रमाण है, उनके कपड़े।' आयोजक ने लोगों को बताया- 'जब दयालु राष्ट्रपति सभा के लिए आ रहे थे, तभी उन्हें रास्ते में गड्ढे में पड़ा एक सूअर का बच्चा दिखाई दिया। उन्होंने अपने कपड़ों की परवाह किए बिना उसे गड्ढे से बाहर निकाला और हाथ-पैर धोकर हमारे बीच आ पहुँचे।'

आयोजक यह बता रहा था, तभी बीच में ही लिंकन उठे और बोले- 'आप लोगों को कुछ गलतफहमी हुई है। हकीकत में वह पिल्ला गड्ढे के कीचड़ में फंसकर तड़प रहा था ! उसे देख मेरा हृदय तड़पने लगा था। मैं उसके लिए नहीं बल्कि अपनी तकलीफ दूर करने के लिए गड्ढे में उतरा और उसे बाहर निकाला। इसी कारण हाथ-पैर

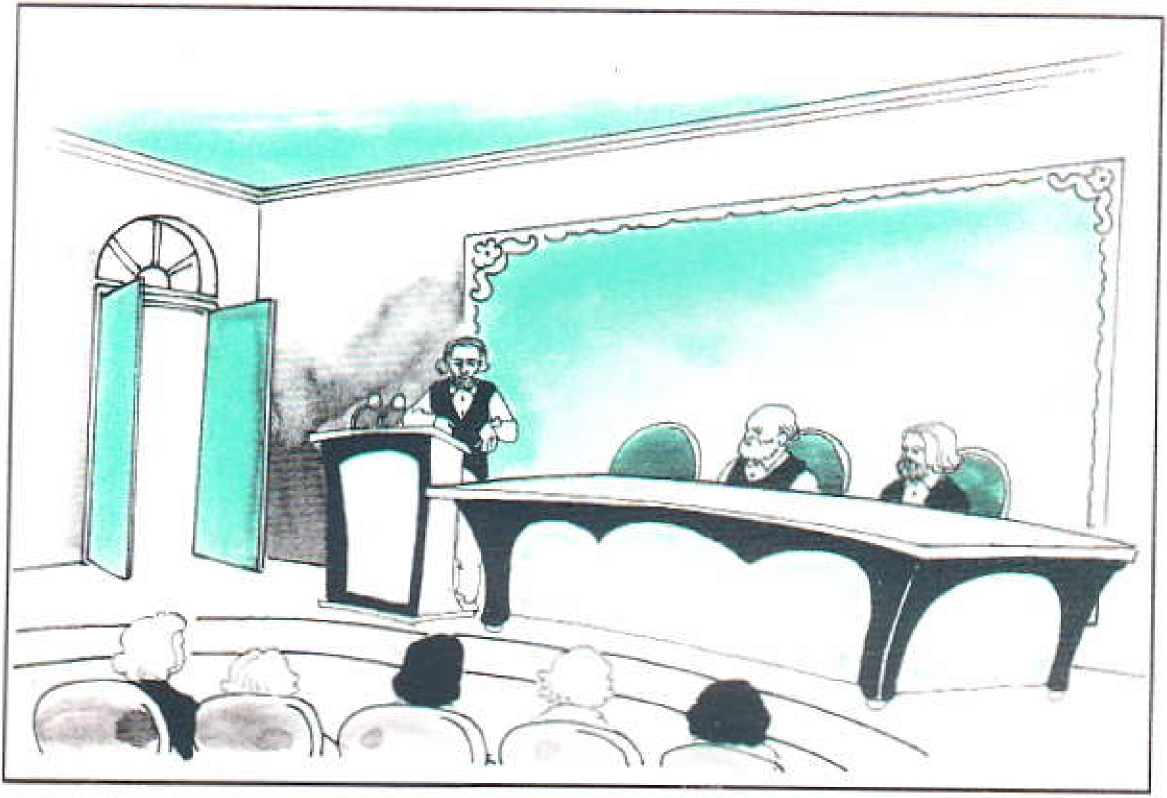

और कपड़े गंदे हो गए। हाथ-पैर तो उसी समय धो लिए किन्तु सभा शुरू होने में बहुत कम समय बचा था। मुझे सही समय पर पहुँचना था, इसलिए कपड़ों की परवाह किए बिना आपके बीच आ गया। अब घर पहुँचकर, इत्मिनान से कपड़े बदल लूँगा।

सुनकर दयालु अब्राहम लिंकन के प्रति लोगों के दिल में प्रेम और आदर का भाव बढ़ गया।

☆

अनाज की कीमत

दक्षिण भारत के मंगल बेड़ा प्रांत के सूबेदार संत दामाजी थे। वे मंगल बेड़ा का कारोबार बड़ी कुशलता से देख रहे थे। उस समय इस क्षेत्र पर मुगल बादशाह का राज्य था।

देश में भयंकर अकाल पड़ा। पशु-पक्षी अन्न-जल के लिए तरस गए। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। हजारों लोग बेमौत मर गए। परन्तु सरकारी गोदाम में अनाज भरा था।

संत दामाजी और उनकी पत्नी भगवान के परम भक्त थे। वे बड़े दयालु थे। प्रजा का दुःख उनसे देखा नहीं गया। बादशाह की आज्ञा के बिना ही संत दामाजी ने सरकारी अन्न भंडार प्रजा के लिए खोल दिए। भूखी प्रजा को बड़ी राहत मिली। दामाजी को भी आत्म शांति मिली।

संत दामाजी के सहायक नायब सूबेदार को यह सब अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा- दामाजी को नीचा दिखाने का अच्छा मौका है। एक पंथ दो काज हो सकते हैं। दामाजी की शिकायत से बादशाह नाराज होगा। इस शिकायत से खुश होकर बादशाह मेरी तरक्की कर सकते हैं।

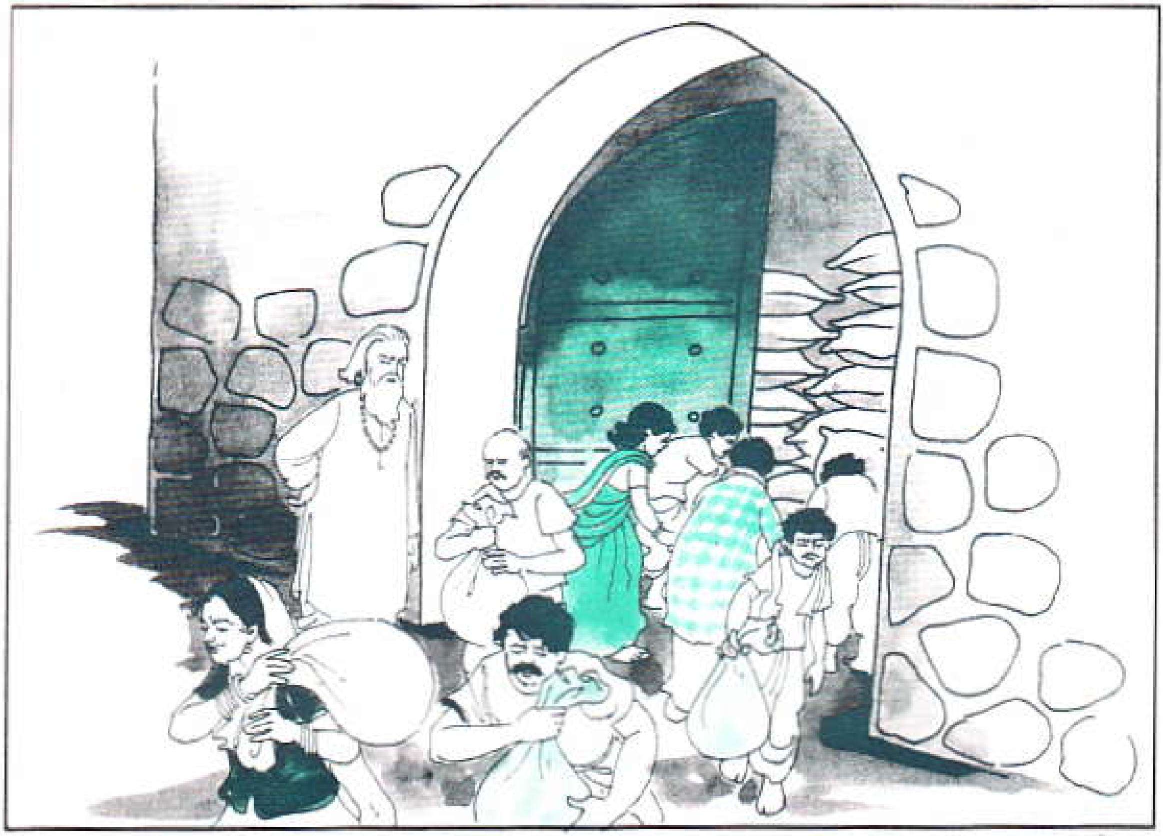

उसने तुरन्त बादशाह को पत्र लिखकर संत दामाजी के इस काम की जानकारी दी। आपकी अनुमति के बिना दामाजी ने सरकारी गोदाम का अनाज लुटा दिया है।

बादशाह को पत्र मिला। पत्र पढ़ते ही वे आग-बबूला हो गए। संत दामाजी पर बड़ा क्रोध आया। सिपाहियों को आदेश दिया- 'दामाजी को गिरफ्तार कर लाया जाए।'

सिपाही मंगल बेड़ा रवाना हो गए। वे दामाजी के पास पहुँच ही नहीं पाए थे कि इधर एक चमत्कार हो गया। एक ग्रामीण किशोर दरबार में बादशाह के सामने आया। उसके हाथ में एक थैली थी। उसने बादशाह को आदर के साथ प्रणाम किया और कहा- 'बादशाह सलामत, मैं मंगल बेड़ा से संत दामाजी के पास से आया हूँ।'

ग्रामीण किशोर का चमकदार चेहरा, मधुर-वाणी सुन, बादशाह उससे बड़े प्रभावित हुए। पूछा- 'आप किसलिए आए हैं ? आपका नाम क्या है?'

ग्रामीण युवक ने जवाब दिया- 'मैं दामाजी के अन्न से पला, एक नीची जाति का हूं। मेरा नाम 'बिठू' है। मेरे मालिक को क्षमा करें। अकाल की मार से प्रजा भूखों मर रही थी। सरकारी गोदाम में अनाज भरा पड़ा था। समय इतना नहीं था कि आपकी आज्ञा लेने मैं आता। इस कारण मेरे मालिक ने जरूरतमंद गरीब लोगों को अनाज बांटकर उनकी जान बचाई है। मैं उस अनाज की कीमत चुकाने आया हूँ। इस थैली में सोने की मुहरें हैं। कृपया इन्हें सरकारी खजाने में जमा कर लीजिए। मुझे मालूम हुआ है, नायब सूबेदार ने अपने स्वार्थ के लिए आपको झूठी खबर भिजवाई है।'

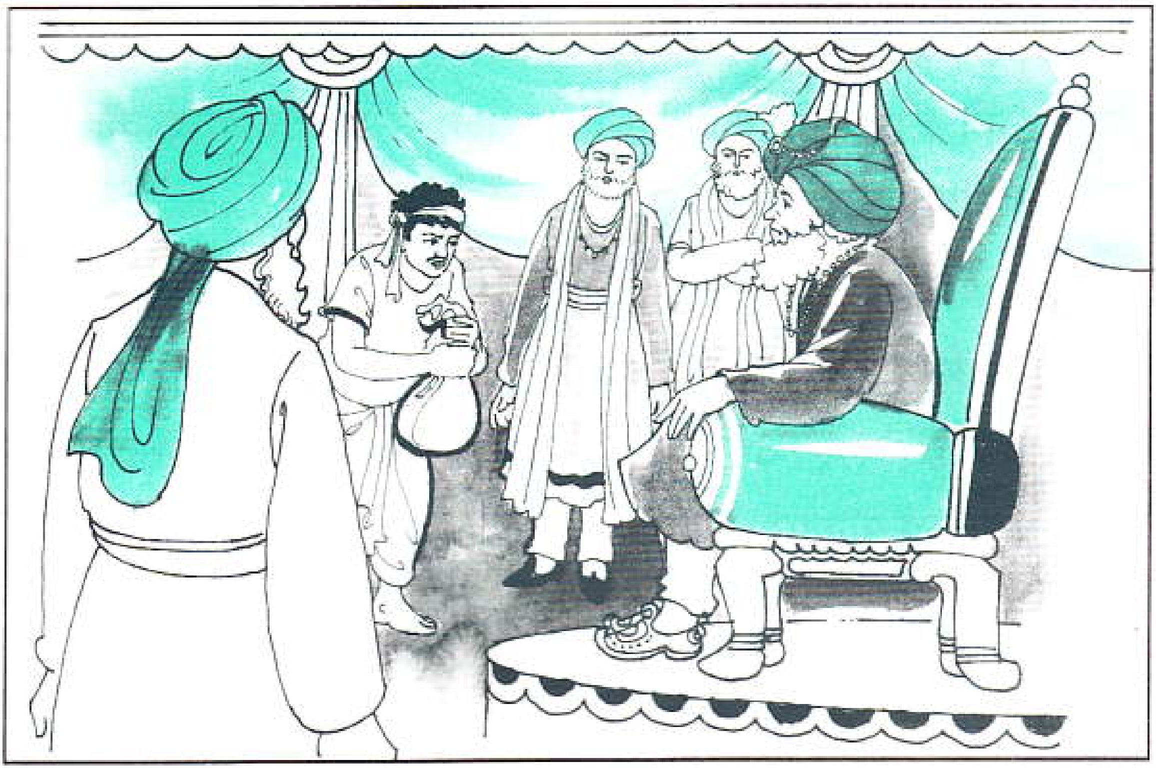

ये सारी बातें जानकर बादशाह को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने व्यर्थ ही बेकसूर दामाजी को बंदी बनाने का हुक्म दे दिया था। बादशाह ने अपने खजांची को थैली देते हुए कहा– 'मंगल बेड़ा के गोदाम के अनाज की कीमत गिनकर सरकारी खजाने में जमा कर लें। शेष मोहरें इस युवक को लौटा दो।'

खजांची थैली लेकर खजाने में गया। थैली उलटकर खाली की। थैली फिर से मोहरों से भर गई। इस तरह खजांची ने दो-तीन बार

किया। हर बार थैली खाली हुई, फिर भर गई। आखिर खजांची ने अनाज की कीमत गिनकर शेष रुपए थैली में रखकर युवक को लौटा दिए। ग्रामीण युवक लौट पड़ा।

खजांची ने सारी बातें बादशाह सलामत को बताई। बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह से रहा नहीं गया। वे 'बिठू' के दर्शन के लिए उतावले हो गए। वे उसी समय मंगल बेड़ा के लिए अपने दल-बल के साथ रवाना हो गए।

बादशाह मंगल बेड़ा पहुंचे। संत दामाजी से मिले। उनसे 'बिठू' को बुलाने के लिए कहा। दामाजी चक्कर में पड़ गए। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया। तब बादशाह ने संत दामाजी को पूरा किस्सा सुनाया।

दामाजी समझ गए कि मामला क्या है? वे बादशाह से बोले- 'आप बड़े भाग्यशाली हैं। स्वयं भगवान ने आपको दर्शन दिए हैं। 'बिठू' ही मेरे इष्ट देव 'बिठोबा' हैं।'

बादशाह ने संत दामाजी की खूब प्रशंसा की। झूठी खबर देने के लिए नायब सूबेदार को दंडित किया और राजधानी लौट आए।

☆

तेरा हज हमें कबूल है

मुसलमान भाई हज यात्रा को बड़ा पुण्य मानते हैं। सभी स्त्री-पुरुष पीर-फकीर, बादशाह, संत सभी की एक बार हज यात्रा करने की चाह होती है।

लीओ नाम के एक संत थे। वे हज यात्रा करने जा रहे थे। काबा की ओर जाते समय उन्हें एक अपाहिज कुत्ता दिखाई दिया। वह रास्ते के किनारे पड़ा था। उसके पैरों पर से शायद कोई गाड़ी निकल गई थी। इस कारण वह घायल हो गया था। चलने-फिरने के लायक नहीं रह गया था। उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया।

संत लीओ ने उसे देखा। उन्हें उस पर दया आ गई। दयालु लीओ ने सोचा- इस अपाहिज प्राणी की ओर ध्यान नहीं दिया तो बेचारा यहीं पड़े-पड़े, भूखा-प्यासा मर जाएगा। उन्होंने उसे उठाया। एक कुएँ के पास पहुँचे। कुएँ पर रस्सी-बाल्टी भी नहीं थी। कुएँ में पानी गहराई में था। लीओ सोचते रहे- कुएँ से पानी कैसे निकाला जाए? उनके पास भी कोई बर्तन नहीं था। न उस समय वहाँ कोई यात्री था।

संत की नजर कुएँ के पास लगे पेड़ पर गई। उसके पत्ते तोड़े। पत्तों

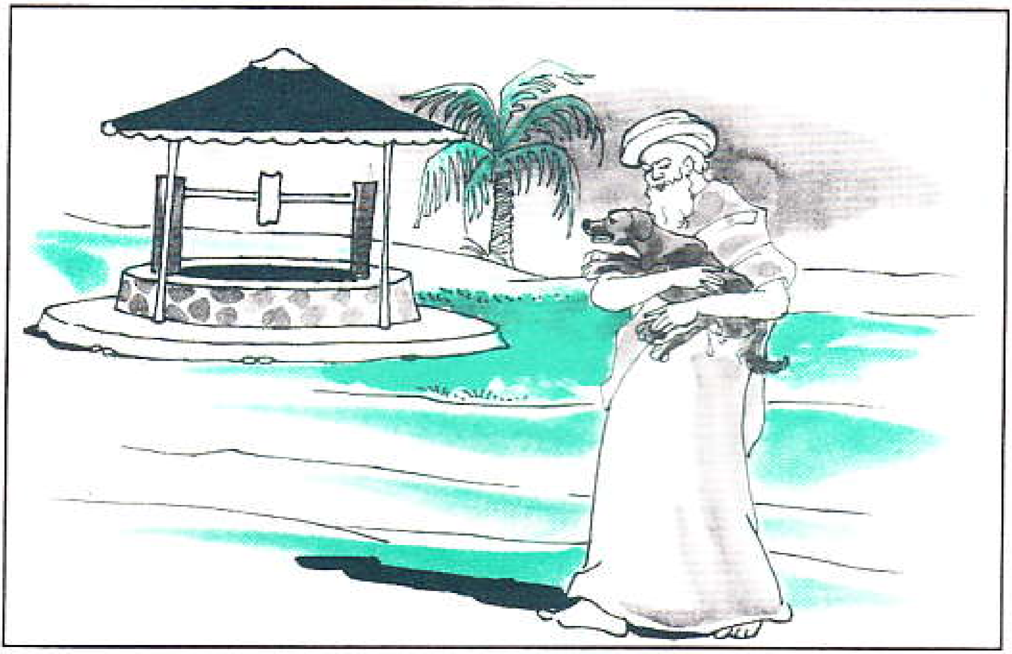

का बड़ा दोना बनाया। सिर पर बंधी पगड़ी उतारी। पगड़ी से दोना बाँधकर कुएँ में लटकाया और कुएँ से पानी निकाला। दोने में जितना पानी आया- उसे कुत्ते को पिलाया। पानी पीते ही, प्यासे कुत्ते की जान में जान आ गई। वह उठ खड़ा हुआ। कान और पूंछ हिलाने लगा- मानों वह संत का एहसान प्रकट कर रहा हो।

संत लीओ खुश हो गए। उन्होंने कुत्ते को गोद में उठाया और आगे चल दिए। राह में एक मस्जिद थी। वे वहाँ रुके। नमाज पढ़ी। मस्जिद के मुल्ला से कहा कि वे काबा जा रहे हैं। साथी कुत्ता अपाहिज है। चल नहीं सकता। इस कारण उसे इतनी दूर उठाकर ले जाना संभव नहीं।

उनके काबा से लौटने तक वह उसकी देखभाल करें। मुल्ला ने संत लीओ की बात मंजूर कर ली। वह कुत्ते की देखभाल करने को राजी हो गया।

संत उसे कुत्ता सौंपकर आगे चल दिए। दिन डूब गया। अंधेरा बढ़ने गया। संत एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे। तभी आकाशवाणी हुई– 'तूने एक प्राणी की रक्षा की है, इस कारण तेरा हज हमें कबूल है। अब तुझे वहाँ जाना हो तो जा और न जाना हो तो न जा तेरी मर्जी।'

एक असहाय प्राणी पर दया का फल संत लीओ को मिल गया। वे बिना काबा गए लौट पड़े। मस्जिद तक आए। कुत्ते को देख बड़े खुश हुए, अल्लाह को दुहाई देने लगे।

☆

दयालु राजा शिवि

पुराने समय की बात है। शिवि नाम के एक राजा थे। वे बड़े दयालु और परोपकारी थे। राजा शिवि ने अपनी शरण में आने वाले हर प्राणी की रक्षा करने का व्रत ले रखा था। इससे दूर-दूर तक उनकी कीर्ति फैल गई थी।

स्वर्ग लोक तक उनकी कीर्ति पहुँच गई। स्वर्ग लोक के राजा इन्द्र भी उनसे मन ही मन डरने लगे। कहीं, किसी दिन राजा शिवि उनका इन्द्रासन न छीन लें। उन्होंने राजा शिवि का व्रत तोड़ने का विचार किया।

इसके लिए देवराज इन्द्र ने अग्निदेव को मनाया। अग्नि देव और इन्द्र ने मिलकर राजा शिवि का व्रत भंग करने की तरकीब सोची।

अग्निदेव ने कबूतर का रूप धारण किया। इन्द्र ने बाज पक्षी का। रूप धारणकर दोनों राजा शिवि के दरबार में गए। राजा शिवि सिंहासन पर बैठे थे। दरबारी अपने-अपने आसन पर बैठे थे। तभी कबूतर एकदम

राजा शिवि की गोदी में जा बैठा। उसके पीछे-पीछे बाज भी राजा शिवि के सामने जा पहुँचा।

कबूतर राजा शिवि से बोला- 'महाराज, यह बाज मेरी जान लेना चाहता है। दया करके इससे मेरी रक्षा कीजिए। मैं आपकी शरण में हूँ। इससे मुझे बचाकर जीवन दान दीजिए।

बाज बोला- 'महाराज ! यह मेरा शिकार है। मुझे दे दीजिए। मैं इसे मारकर अपने परिवार के साथ खाऊंगा। इसे आपने गोद में क्यों

छुपा रखा है ?'

राजा शिवि बोले- 'मैं इसे तुम्हें नहीं दे सकता।'

'क्यों?' - बाज ने पूछा।

राजा ने जवाब दिया- 'यह मेरी शरण में आया है। इसे मैं तुम्हें कैसे सौंप दूं। मेरा व्रत है- शरण में आने वाले हर प्राणी की मैं रक्षा करुं। तुम इसे छोड़ दो। इसे मैं तुम्हें किसी हालत में नहीं दे सकता।'

बाज बोला- 'आप राजा हैं। न्यायी हैं। आपके लिए सभी बराबर हैं। एक को बचाओ और दूसरे को पूरे परिवार सहित भूखे मरने दो ! यह आपका कैसा न्याय है, राजन् ?'

राजा ने कहा- 'मैं इसे तो तुम्हें नहीं दूंगा, न ही तुम्हें भूखों मारना चाहता हूँ। इसके बदले कोई और चीज मांग लो।'

'राजन् ! इसके बदले आप अपने शरीर से इसके वजन के बराबर माँस काटकर दे दीजिए। मैं इससे संतुष्ट हो जाऊंगा।'

राजा शिवि ने कहा- 'मुझे तुम्हारी यह माँग मंजूर है।'

दरबार में तराजू और छुरी मंगाई गई। तराजू के एक पलड़े पर कबूतर

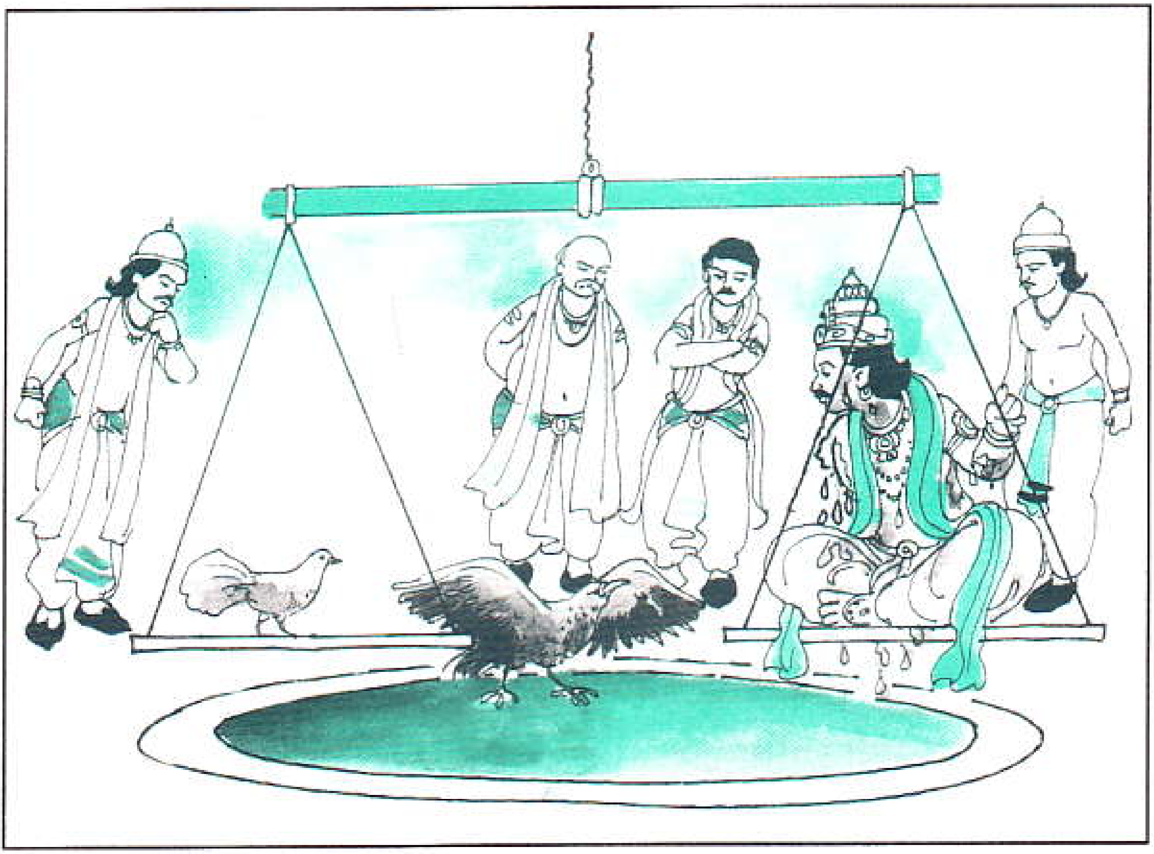

को बैठाया गया। दूसरे पलड़े पर, राजा शिवि अपने शरीर से माँस काट-काटकर रखने लगे। माँस से पलड़ा भर गया। फिर भी नहीं झुका। कारण कबूतर बने अग्नि देव ने अपना वजन बढ़ा लिया था।

तब अंत में राजा खुद पलड़े पर बैठ गए।

राजा शिवि के पलड़े पर बैठते ही दोनों पलड़े बराबर हो गए। राजा

ने अपने आप को बाज को समर्पित कर दिया। बाज से निवेदन किया कि वह आकर अपना आहार ग्रहण करें।

बाज और कबूतर अब अधिक देर तक नहीं रुक सके। वे अपने असली रूप में राजा के सामने प्रगट हो गए।

राजा शिवि ने उन्हें आदर सहित प्रणाम किया।

देवराज इन्द्र ने राजा शिवि की प्रशंसा की। अपनी परीक्षा में सफल होने पर उनसे वरदान माँगने को कहा।

राजा शिवि हाथ जोड़े खड़े थे, बोले- 'मुझे भगवान की भक्ति के अलावा कुछ नहीं चाहिए।'

इन्द्रदेव ने कहा- 'तथास्तु।' (ऐसा ही हो)

इन्द्रदेव और अग्नि देव अपने लोक लौट गए। दयालु राजा शिवि की गिनती आज भी दयालु राजाओं में होती है।

☆

कवि अहमदी

बादशाह तैमूर लंग धन का लोभी था। आक्रमणकारी, अत्याचारी, अन्यायी तथा लुटेरा था। उसकी इन हरकतों से प्रजा दुःखी थी। जैसी बुरी उसकी शक्ल-सूरत थी, वैसा ही वह मन का भी बुरा था। वह लंगड़ा था, इसीलिए इतिहास में तैमूर लंग के नाम से जाना गया। उसने कई देशों पर आक्रमण किए। वहाँ लूटपाट की। हजारों गाँव को उजाड़ा। लाखों परिवारों को बर्बाद किया।

एक बार कुछ बंदियों को उसके सामने लाया गया। उनमें तुर्किस्तान का प्रसिद्ध कवि अहमदी भी था। तैमूर ने अहमदी से कहा- 'मैंने सुना है, कवि लोग बड़े पारखी होते हैं। उनकी नजर बहुत तेज होती है। बताओ इन दो कैदियों की कीमत क्या है ?'

'इनकी कीमत चार सौ अशर्फियों से कम नहीं है, जहाँपनाह।' - अमहदी ने उत्तर दिया।

कवि अहमदी का उत्तर सुनकर बादशाह तैमूर लंग ने उससे पूछा-

'अच्छा बताओ मेरी कीमत क्या है?'

साफ-सच बोलने वाला, निडर कवि, अहमदी बोला- 'आपकी कीमत सिर्फ चौबीस अशर्फियां हैं।'

'क्या मेरी कीमत सिर्फ चौबीस अशर्फियां ही हैं?'- आश्चर्य से बादशाह तैमूर ने कवि अहमदी से पूछा।

'जी हाँ, जहाँपनाह।'

'इतनी कीमत की तो यह मेरी शाल ही है।'

'जी हाँ, जहाँपनाह, आपने सही कहा। मैंने उसी की कीमत लगाई है।'- निडर अहमदी बोला।

तैमूर ने पूछा- 'इसका मतलब मेरी स्वयं की कोई भी कीमत नहीं है।'

'जी हाँ, बादशाह सलामत। आपने सही फरमाया। जिस आदमी में जरा भी दया-ममता नहीं है, उसे 'मनुष्य' कहा भी नहीं जा सकता। फिर उसकी कीमत क्या होगी?'

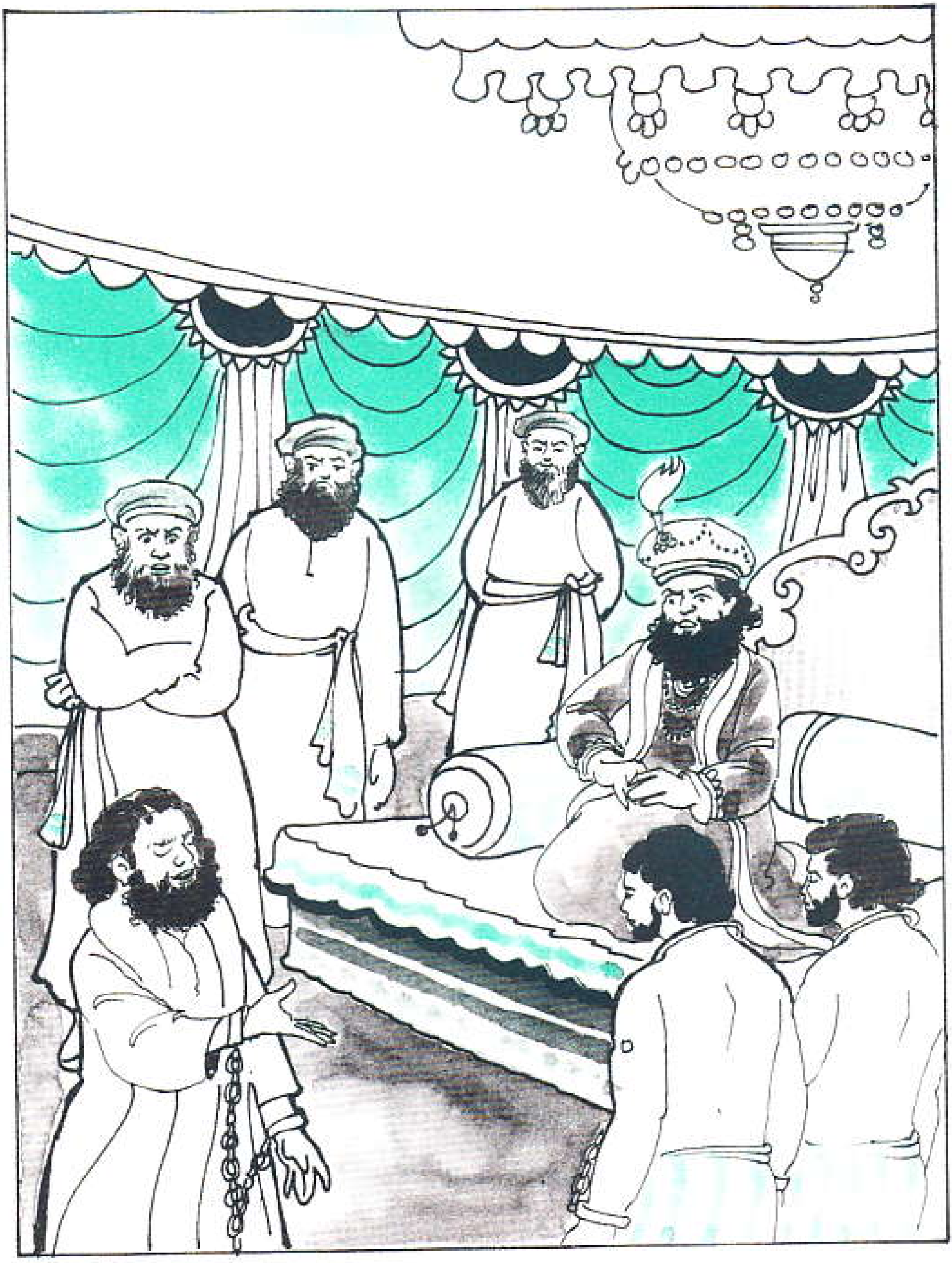

तैमूर अहमदी की बातें चुपचाप सुनता रहा। वह उसे दंड भी न दे सका। यदि तैमूर लंग उसे सजा देता, तो अहमदी ने उसके बारे में जो कुछ कहा था, वह सही सिद्ध हो जाता। अपनी ही बातों के जाल में फँसे तैमूर ने उसे 'पागल कवि' करार कर रिहा कर दिया।

अहमदी रिहा हो गया। वह अपनी मस्ती में अपने गीत गाता हुआ चला गया।

सत्यवादी कभी सच कहने से नहीं चूकता है। न कभी किसी से डरता है। मौत का डर भी उसको सच्ची बात कहने से नहीं रोक पाता। कवि अहमदी भी सत्यवादी था। सत्य कहा और इसी कारण मौत के मुँह से बच भी गया।

☆

दुर्बल को न सताइए जाकि मोटी हाय,
बिना जीव की साँस ते, लौह भस्म हो जाय।

हमारे प्रकाशन

श्रेष्ठ कौन	7.00	सूरदास	9.00
रोटी का सवाल	7.00	गुरु नानकदेव	10.00
मन का चोर	9.00	लाले का उस्ताद	8.00
कजरी	8.00	निमाड़ी लोककथाएँ	9.00
रोबोट	8.00	झूठ की सजा	8.00
छत्तीसगढ़ की लोककथाएं	9.00	गौतम बुद्ध	9.00
कठौती में गंगा	8.00	महावीर स्वामी	9.00
सच्ची प्रार्थना	8.00	ईसा मसीह	9.00
दो कुओं की कहानी	9.00	वाणी का कमाल	8.00
सहोदरा	9.00	मंगू का सपना	7.00
सच्ची तीर्थ यात्रा	10.00	कमजोरी का स्वयंवर	9.00
चिंगारी	8.00	नैतिक कथाएँ भाग 1	8.50
संत कबीरदास व संत सिंगाजी	9.00	नैतिक कथाएँ भाग 2	8.00
संत रविदास	8.00	मानव धर्म	9.00
मीराबाई	8.00	सुनो कहानी	8.50
गोस्वामी तुलसीदास	8.00	सुनहरा नेवला	7.00
नया जन्म	8.00	जैसी करनी वैसी भरनी	9.00
सच्चा न्याय	8.00	पैगम्बर हजरत मोहम्मद	10.00

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र.
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर 'आर', इन्दौर (म.प्र.)-452010,
फोन : 2551917, 2574104 फैक्स : 0731-2551573
e-mail : srcindore@dataone.in ♦ literacy@satyam.net.in